प्रश्न संख्या Balram Lodhi कुल परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) 21-10-2020 कौटिल्य एकेडमी 42

1 A

(1) पारदर्शिता से → सरकार मे जनता की भागीदारी बढ़ती है।
→ (2) भ्रष्टाचार व अनियमितताओं पर रोक लगती है।
(3) सूचनाएँ जनता तक पहुँचती है जिससे जवाबदेहिता व लोकतंत्र मजबूत होता है।
→ (4) सरकार के प्रति जनता का विश्वास व सहभागिता बढ़ती है।
प्रशासनिक ढाँचा मजबूत होता है
→ व कार्यकुशलता में वृद्धि।

2½

1 B

मानव की प्रवृत्तियाँ
→ साहस
→ संयम
→ न्याय
→ विवेक

2

C

वस्तुनिष्ठता → निर्णय लेते समय उन आधारों से मुक्त रहना जो व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना में निहित हो जैसे - पूर्वाग्रह, मान्यताएँ, व्यक्तिगत धारणाएँ आदि
→ तार्किक एवं सर्वमान्य आधार पर निर्णय

2

1 D

नैतिक मूल्य —

मूल्य वे सबसे गहरे नैतिक आदर्श होते हैं जिन्हें समाज की सामान्य समझ से सामाजिक जीवन को श्रेष्ठ व संभव बनाने के लिए आवश्यक निर्धारित किया जाता है।

नैतिक मूल्य → सामाजिक/नैतिक नियम

↓ आंतरिक → एथिक्स

↓ बाह्य → मोरैलिटी

E

सम्मान जनक मौत

↓

(i) गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार

युथनेशिया सिद्धांत → (ii) पीड़ाजनक रोगों से कष्ट से छुटकारा

अनु. 21 के तहत

(iii) जीवन का अधिकार प्राप्त तो मरने का क्यों नहीं

1 F लेखक — बी॰ आर॰ अम्बेडकर

1 G (i) प्रायः जन्मजात किंतु अभ्यास से निखरती
(ii) सम्बंध → क्षमताओं से
(iii) जीवन की सफलताएँ निर्धारित करती हैं।
(iv) संगीत की कला / स्वर, क्रिकेट की क्षमता

2

1 H नैतिक मूल्यों का ~~व्यवहार~~ व्यवहार में अनुपालन आचरण है। यह किसी कृत्य के नैतिक या अनैतिक होने का प्रमुख निर्धारक है क्योंकि कोई कृत्य जब आचरण के स्तर पर नहीं आ जाता तब तक उसका निर्धारण करना मुश्किल।

2.5

1 I (1) दुःख है।
(2) दुःख का कारण — इच्छाएँ हैं
(3) दुःख निदान है — दुःख अभिगामिनी प्रतिपदा
(4) दुःख निदान के उपाय → अष्टांगिक मार्ग

2

1 J

करुणा → एक सामान्य भाव जो दूसरों के दुःख के बारे में

Cognitive | Emotive | व्यवहार

तीनों स्तर पर हो

→ परोपकार का मूल कारण

(2)

1 K

① नीति निर्धारण
② नीतियों, योजनाओं का क्रियान्वयन
③ प्रत्यायोजित विधान
④ प्रशासकीय न्यायिक निर्णय

(2)

1 L

नैतिक संहिता	आचरण संहिता
① सामान्य एवं अमूर्त	① विशिष्ट व मूर्त
② स्थायी (सामान्यतः)	② परिवर्तनशील
③ नैतिक मूल्यों का समावेश	③ नैतिक मूल्य से सुसंगत कार्यों का समावेश

(2)

1 0

अरस्तू

2 अ

आधुनिक भारत के अग्रदूत और ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजाराम मोहन रॉय का प्रमुख योगदान महिला अधिकारों को लेकर है —

सामाजिक सुधार कार्य →

1. 1828 - ब्रह्मसमाज सामाजिक सुधार हेतु
2. सतीप्रथा उन्मूलन
   - 1829 - अधिनियम
3. बहुविवाह का विरोध
4. विधवा पुनर्विवाह का समर्थन
5. महिलाओं की शिक्षा सम्पत्ति का उत्तराधिकार के लिए कार्य
6. अस्पृश्यता, अंधविश्वास जातिवाद का विरोध

इसलिए इन्हें

3.5

प्लेटो
↓
चार स्तंभ

न्याय | साम्यवाद | शिक्षा | चिंतन

① न्याय राज्य का कानूनी रूप नहीं बल्कि नैतिक सद्गुण है।

② आत्मा के समान है।

③ अहस्तक्षेप न्यायादि → एकता → सामंजस्य

④ न्याय की स्थापना हेतु साहस व व्यापारी को विवेक (प्रशासन) द्वारा नियंत्रित किया जाए तभी न्याय की स्थापना होगी क्योंकि

उत्पादक वर्ग → लालच
सैनिक → साहस क्रोध
प्रशासक → विवेक

विवेक → नियंत्रण → उत्पादक, सैनिक

इस तरह वर्तमान में भी न्याय स्थापना हेतु विवेकशील प्रशासक वर्ग द्वारा सैनिक व आर्थिक विनियमन किया जाता है।

2

प्लेटो ने अपनी राज्य सम्बंधी संकल्पना में राज्य के चार स्तंभ बताए हैं —

चार स्तंभ

- साम्यवाद → राजा व सम्पत्ति
  - ↳ जनता हित में कार्य
  - ↳ प्रशासक – दार्शनिक हो
- चिंतन ← सद्गुणों का विकास, संतुलित व सामंजस्य जीवन
- न्याय
  - ↓ नैतिक सद्गुण है।
  - ↓ विवेक द्वारा संयम/वासना, साहस पर नियंत्रण
- शिक्षा
  - ↳ नैतिक विकास शिक्षा से ही संभव
  - ↳ व्यक्ति के लालसा, साहस पर बुद्धि का नियंत्रण हो।
  - ↳ एकता व सामंजस्य – व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर

इस तरह प्लेटो के राज्य के चार स्तंभ एक काल्पनिक और आदर्शों-मुक्त राज्य की संकल्पना करते हैं।

4

आर्थिक चिंतन

→ The Problem of Rupee में

→ कृषि को अन्य उद्योगों के समान माना जाए।

→ बड़ी व छोटी जोत विभेद समाप्त हो।

→ सहज कर प्रणाली हो।

→ वितरण मूलक समान की स्थापना।

→ आर्थिक असमानता दूर हो तभी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन संभव होगा।

→ सभी को समान अवसर मिलें।

अम्बेडकर के आर्थिक विचार अभी प्रासंगिक हैं जो समावेशी व सतत विकास के लिए आवश्यक है।

4

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

प्रश्न संख्या 3 (b)

एक संवेदनशील, समाजवादी विचारक को हमेशा नैतिक असंगति या पाखंड (हिपोक्रेसी) से बचना चाहिए तभी वह सामाजिक सुधारों को निर्धारित कर सकता है।

वस्तुतः यदि निशांत के विचारों और आचरण मे अंतर होगा तो (कथनी-करनी अलग-अलग) समाज पर उनकी बातों, विचारों का प्रभाव सीमित या अप्रभावी हो जाएगा।

इतना ही नहीं इस असंगति का समाज पर नकारात्मक एवं विपरीत प्रभाव पड़ सकता है जैसे - लोगों की यह धारणा विकसित हो सकती है कि जब एक बुद्धजीवी के कथन और कार्य मे अंतर है तो हमारे क्यों न हो?

अतः निशांत को अपने बच्चों को भी सरकारी स्कूल मे भेजना चाहिए अपनी गलती स्वीकारनी चाहिए

3.5